DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
B.A PART-I (Sub./Gen.)

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date.....14/04/2020

राजनीति विज्ञान की प्रमुख अध्ययन पद्धतियाँ

राजनीति विज्ञान में अगमनात्मक पद्धति का प्रमुख स्थान है। इस पद्धति में पहले तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं और इसके बाद सामान्य सिद्धान्तों का निरूपण किया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख प्रयोगकर्त्ता अरस्तू है। इस पद्धति में निम्न पद्धतियों का समावेश किया जाता है—

(1) पर्यवेक्षणात्मक पद्धति — इसे अवलोकन पद्धति भी कहते हैं। यह व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। इसलिए अपेक्षाकृत ठोस होती है। इस पद्धति के अन्तर्गत शासन प्रणालियों और राजनीतिक संस्थाओं का नजदीक से अध्ययन किया जाता है। यह पद्धति बहुत प्राचीन है। राजनीति वैज्ञानिक अरस्तू ने इस पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

(2) ऐतिहासिक पद्धति — राजनीति संस्थाओं का निर्माण नहीं किया जाता वरन् वे विकास का परिणाम होती हैं। अतः प्रत्येक राजनीति संस्था का एक अतीत होता है और उसके अतीत से परिचित होकर ही उसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए राजनीति विज्ञान में ऐतिहासिक पद्धति का बहुत अधिक महत्त्व है।

(3) तुलनात्मक पद्धति — इस पद्धति के अन्तर्गत अध्ययनकर्त्ता विभिन्न राज्यों, उनके संगठनों, नीतियों एवं कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। और इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर सामान्य राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'Politics' में 158 संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन करके क्रांतियों के कारण और उनको रोकने के उपायों का उल्लेख किया है।

निगमनात्मक पद्धति — इस पद्धति में पहले सिद्धांत निरूपण किया जाता है; बाद में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। इसमें केवल एक ही पद्धति सम्मिलित की गई है। इस पद्धति के प्रमुख प्रयोगकर्त्ता प्लेटो हैं।

(प्रकरण समाप्त)